आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

# अजायब ✵ बानी

वर्ष : तेरहवां | अंक : नौवां | जनवरी-2016


(5)

**नये साल की शुभकामनाएं**

(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा)

(9)

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

**प्रभु का प्यार**

(गुरु रामदास जी की बानी)

(21)

**गुरु का दीदार**

(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से)

(25)

सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

**शब्द**

(स्वामी जी महाराज की बानी)


**संपादक** – प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

**विशेष सलाहकार**–गुरमेल सिंह नौरिया
096 67 23 33 04
099 28 92 53 04

**उप संपादक**–नन्दनी

**सहयोग**–परमजीत सिंह व जस्सी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2016 -166- मूल्य - पाँच रुपये

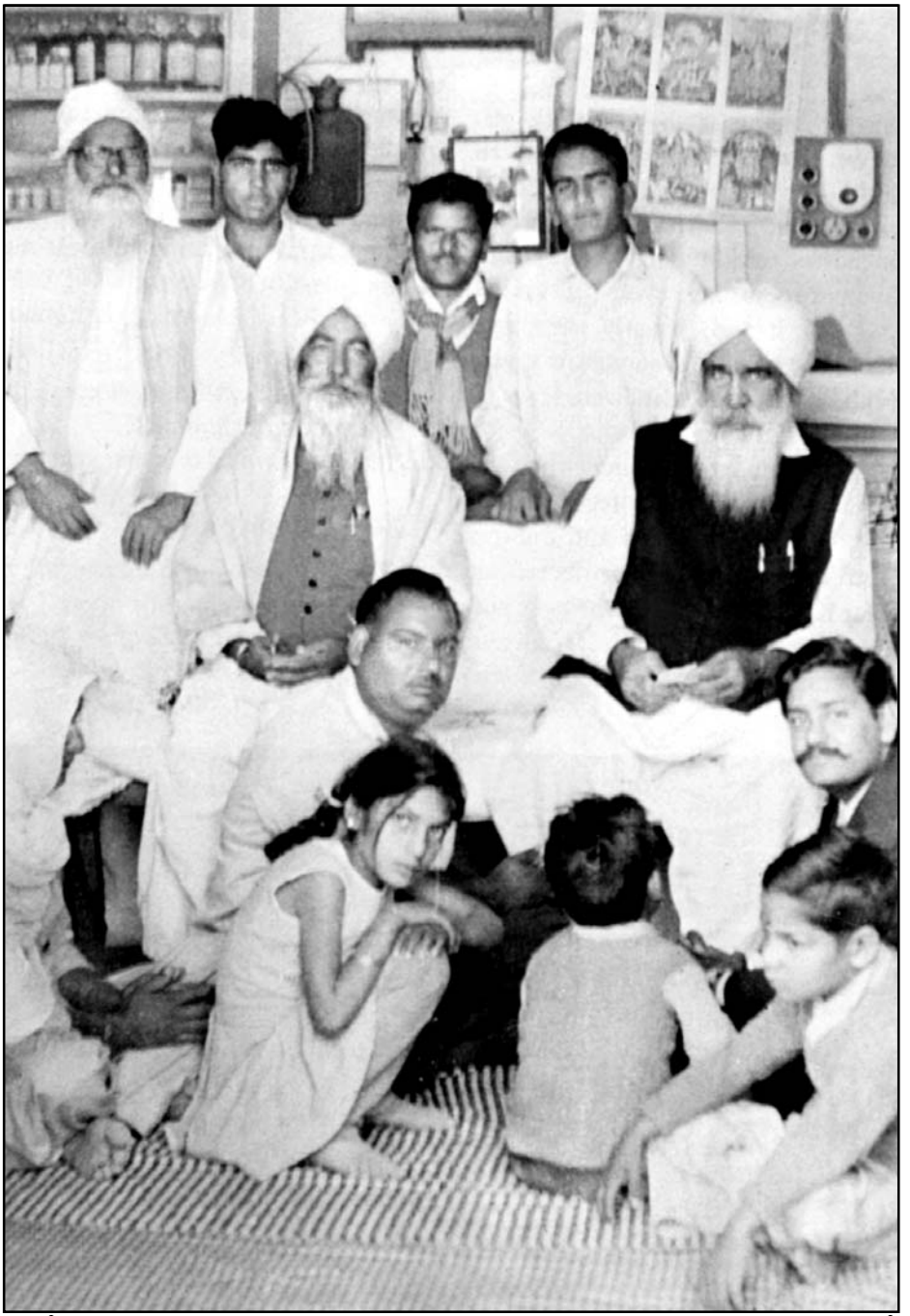

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

# नये साल की शुभकामनाएं

सच्चे पातशाह हुजूर सावन-कृपाल के प्यारे बच्चो!

नये साल की खुशी के मौके पर मेरे महान सतगुरु के पवित्र नाम और उनकी सच्ची-सुच्ची याद में आप सबको मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई। मैं चाहता हूँ कि नया साल आपके लिए खुशियों भरा हो और आप सदा प्रगति के पथ पर रहें।

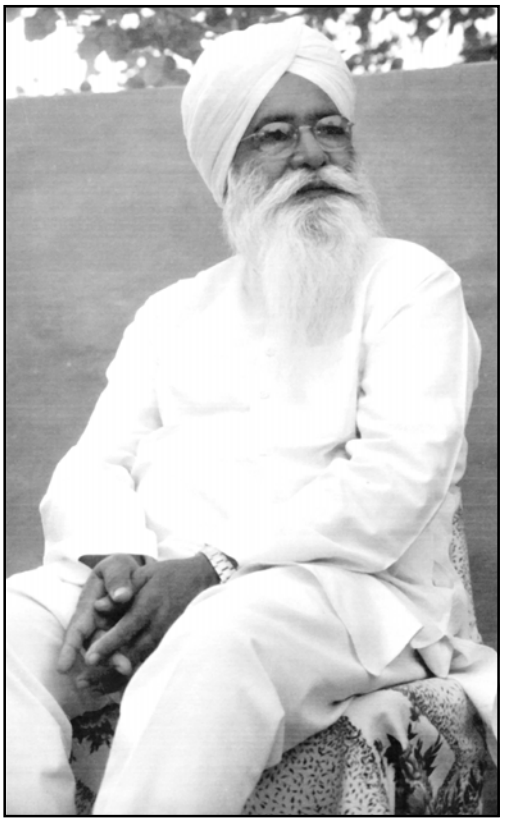

प्यारे यो! सब ऋषियों-मुनियों और पीर-पैगम्बरों ने अपने समय के अनुसार अपनी-अपनी भाषा और शब्दों में हमें सावधान किया है कि पता नहीं मौत का बाज कब और कहाँ आकर हम पर झपट्टा मारे! मौत का बाज छोटा-बड़ा, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, गोरा-काला नहीं देखता। यह टलता नहीं किसी का लिहाज नहीं करता, किसी से डरता नहीं किसी के साथ रियायत नहीं करता। यह वक्त का बड़ा पक्का और पाबंद है; निश्चित समय पर आकर मुँह

दिखाता है। यह रोते-धोते, चीखते-चिल्लाते हुए हमारी जान को कुर्क करके अपने साथ ले जाता है। गुरु बानी में आता हैः

*राणा राओ न को रहे, रंक न तुंग फकीर।*
*वारी आपो आपनी, कोऐ न बान्धे धीर।।*

परमपिता कृपाल अपने सतसंगों में अक्सर मौत का जिक्र करते हुए उर्दू का यह शेर पढ़ा करते थेः

*अगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।*
*सामान सौ बरस का पल की खबर नहीं।।*

हम भूले जीव मौत को भूले बैठे हैं और मौत को नजरअंदाज करके आने वाली सदियों का सामान बना रहे हैं जबकि हम नहीं जानते कि अगला साँस आएगा या नहीं!

सच्चे पातशाह सावन कहा करते थे, ''यह आश्चर्यजनक बात है कि हम अपने रिश्तेदार, साथी-सम्बंधी, दोस्तों-मित्रों को अपने कंधे पर उठाकर श्मशान भूमि में अग्नि के हवाले कर आते हैं लेकिन हमारे इस मश्करे मन ने कभी हमें यह महसूस नहीं होने दिया कि ऐसा दिन हम पर भी आएगा और हमें इस दुनिया के भरे बाजार को अचानक छोड़कर जाना पड़ेगा। वह मौका हमारे ध्यान में नहीं।'' गुरुबानी का फरमान हैः

*कहाँ सो भाई मीत है, देख नैन पसार।*
*इक चाले इक चालसी सब कोई अपनी वार।।*

सूफी सन्त फरीद साहब कहते हैं, ''मौत के वक्त जान टूटती है और हड्डियां कड़-कड़ करती हैं।''

*जिन्द निमाणी कढिए हड्डां कू कड़काए।*

कबीर साहब अपनी बानी में हमें समझाते हैंः

*तन ते प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार।*
*आध घड़ी कोऊ न राखत, घर ते देत निकार।।*

*घर की नार बहुत हित जास्यो, सदा रहत संग लागी।*
*जब ऐह हंस तजी यह काया, प्रेत-प्रेत कर भागी।।*

भक्त नामदेव जी ने इस मौके का चित्र इस तरह खींचा है:

*मेरी मेरी कौरव करते, दुर्योधन से भाई।*
*बारह योजन छत्र झुले थे, देही गिरज न खाई।*
*सरब सोने की लंका होती, रावण से अधिकाई।*
*कहाँ भयो दर बांधे हाथी खिन्न में हुई पराई।।*

सन्तों की बानी बड़ी साफ होती है, यह वहम और भ्रम नहीं रहने देती। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''प्यारेयो! यह मत समझें कि मौत पंडित से तिथि-वार पूछकर आएगी या महूर्त निकलवाकर आएगी कि कौन सा समय अच्छा है? आप यह न समझें कि मौत गरीबों को ही आती है राजा-महाराजाओं का लिहाज करती है। मौत का डंक सबके लिए एक बराबर है।''

प्यारे बच्चो! मैं आपको खुशी और उत्साह के साथ नये साल की शुभकामनाएं देता हूँ। साथ ही आपको ज्यादा जोरदार शब्दों में अपनी दिली भावना और प्यार के साथ यह भी कहना चाहता हूँ कि आप लोग होश करें, समझदारी से काम लें मोह-माया और अज्ञानता की गहरी नींद से उठें; सच्चाई को समझें। मौत को सच और जीने को झूठ जानकर उस धन को इकट्ठा करें जो अंत समय आपके काम आए और इस संसार से जाते वक्त हमारी सहायता करे।

सब सन्तों ने इस मनुष्य जामें की बड़ी उपमा बताई है क्योंकि इस देह मे रहते हुए ही हम परमात्मा से मिल सकते हैं बाकी योनियों को यह रियायत नहीं है। कबीर साहब कहते हैं:

*जिस देही को सिमरे देव, सो देही भज हर की सेव।*
*भजो गोबिंद भूल मत जाओ, मानस जन्म का ऐही लाहो।।*

प्यारे बच्चो! मैं आपको यह सब कुछ सदा ही सतसंग में बताता रहा हूँ लेकिन आज इसलिए जोरदार शब्दों में दोहरा रहा हूँ ताकि आप इसे समझें और इस पर अमल करना शुरू कर दें।

प्यारेयो! मेरे दिल के जज़्बे को समझें मेरे दिल की भावना की कद्र करें, मेरे लफ्ज़ों को अपने जीवन का अंग बनाएं। अपना ज्यादा से ज्यादा समय अभ्यास में लगाएं ताकि मुझे आराम मिले। मेरे महान गुरु ने मुझे जो डयूटी दी है उस ड्यूटी को निभाने में आप मेरी मदद करें। आप भी उन दोनों महान हस्तियों की खुशी और दया प्राप्त करें।

प्यारेयो! यह समय फिर नहीं आएगा और आप इस समय को आँखे मल-मलकर रोएगें पछताएंगे। मैं आपको कैसे समझाऊं! आप मेरे दिल से निकली हुई पुकार और विनती को सुनें। मेरी बात को समझें और आज से ही इसी वक्त से मजबूत होकर भजन-सिमरन में लग जाएं।

अगर हमारी कमाई नेक होगी, जीवन साफ सुथरा होगा गुरु पर भरोसा होगा तो अभ्यास बड़ी जल्दी रंग लाएगा। आओ! आज से ही हल्ला बोलें, गुरु के दरबार की तरफ आगे बढ़े। गुरु की खुशी प्राप्त करें और अपना लोक-परलोक सुहेला करें।

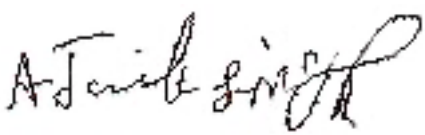

आपके जोड़े झाड़ने वाला

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# प्रभु का प्यार

गुरु रामदास जी की बानी | DVD -544 | 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

*वाह मेरे सावन वाह मेरे दाता ।।*

हाँ भाई! परमात्मा हमेशा ही सन्त-महात्माओं को संसार में भेजता रहता है, पूरे महात्मा के बिना संसार कभी भी खाली नहीं हुआ। कबीर साहब कहते हैं, ''आकाश को आग लगी हुई है अंगियार झड़-झड़कर गिर रहे हैं अगर दुनिया में सन्त न होते तो यह दुनिया जलकर मर जाती।'' हमें पता ही है कि यहाँ ईर्ष्या की कितनी आग है कितना द्वेष भाव है, इंसान बाँस की तरह इस आग में जलकर राख हो जाते हैं।

प्यारेयो! महात्मा संसार में आकर हमारे अंदर प्रभु की याद **प्रभु का प्यार** पैदा करते हैं। महात्मा वक्त के गुरु की महिमा बयान करते हैं क्योंकि वही हमें सच्चे 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ सकते हैं। वक्त की तीन-चार चीज़ें काम देती हैं। वक्त का टीचर हमारे बच्चों को पढ़ा सकता है बेशक कोई टीचर कितना भी अच्छा क्यों न हो अगर वह इस संसार को छोड़ गया है चाहे हम उस टीचर को कितने ही प्यार से याद करें कि वह हमारे बच्चों को पढ़ाएगा वह बहुत अच्छा था लेकिन अब वह हमारे बच्चों को नहीं पढ़ा सकता; वक्त का टीचर ही बच्चों को पढ़ा सकता है।

संसार में बड़े-बड़े लायक डाक्टर पैदा हुए हैं जो मुर्दे को जिन्दा कर देते हैं। इंसान मुर्दे की तरह पड़ा होता है डाक्टर उसे कुछ समय के लिए बात करने के काबिल बना देते हैं। लुकमान धुनन्तर बहुत अच्छे काबिल वैद्य थे अगर आज हमें कोई बीमारी है चाहे हम लुकमान वैद्य पर कितना भी विश्वास करें उसने आकर

हमें दवाई नहीं देनी। आज हमें वक्त के डाक्टर के पास जाने की जरूरत है ताकि वह हमें दवाई देकर हमारे रोग को दूर कर दे।

इसी तरह वक्त के पति की जरूरत होती है। जिस तरह बड़े अच्छे राजा-महाराजा हुए हैं। हिन्दुस्तान में राजा विक्रमादित्य बहुत धर्मात्मा राजा था अगर आज कोई लड़की यह कहे कि मैंने उस धर्मात्मा राजा के साथ शादी करवानी है। वह लड़की उस राजा के साथ शादी करवाने के लिए बेशक कितना भी जत-सत रखे, पुण्य-दान करती रहे लेकिन उस राजा ने आना नहीं कोई औलाद पैदा नहीं करनी इसलिए वक्त के पति की जरूरत है।

प्यारेयो! वक्त की चीज़ें ही काम देती हैं। पहले जो महात्मा हो चुके हैं वे बहुत अच्छे और पवित्र थे हमारे दिल में उनके लिए बहुत इज्ज़त है। अपने वक्त में उन महात्माओं ने 'शब्द-नाम' का उपदेश दिया। आज अगर हम यह जिद्द करके बैठ जाएं कि वही महात्मा हमें तारेगा या हमें नाम का भेद देगा; ऐसा नहीं हो सकता। वक्त का महात्मा ही हमें 'शब्द-नाम' दे सकता है। हमारे दिल में हर महात्मा के लिए इज्ज़त और प्यार है।

इसी तरह वक्त का मजिस्ट्रेट ही हमारे केस का फैसला कर सकता है अगर हम यह कहें कि वह मजिस्ट्रेट बहुत अच्छा था हमने उससे न्याय करवाना है तो ऐसा नहीं हो सकता। बेशक हम उस मजिस्ट्रेट की तस्वीर के आगे धूप देते रहें, प्रार्थनाएं करते रहें कि तू हमारा फैसला कर; उसने आना नहीं हमारा फैसला होना नहीं इसलिए हमें वक्त के मजिस्ट्रेट के पास जाना पड़ेगा।

अगर हमारे अंदर नाम जपने का शौंक, **प्रभु प्यार** की तड़प है तो हमारा फर्ज़ बनता है कि हम वक्त के महात्मा से शब्द-नाम का

भेद लें, अंदर जाकर सच्चाई को देखें। आज तक जितने भी महात्मा संसार में आए हैं सबका शब्द-नाम का ही होका रहा है।

गुरु ग्रंथ साहब रूहानियत का खजाना है। गुरु ग्रंथ साहब में परम सन्तों की बानी है जो बहुत समझने वाली है। सभी परम सन्त सच्चखंड धुरधाम पहुँचे थे। पहले मैंने प्रेमियों के लिए बहुत से सतसंग गौड़ी राग में से किए थे जिससे सन्तमत पर चलने वाले श्रद्धालुओं को बहुत मदद मिली।

अब मैं सारंग की वार पर सतसंग कर रहा हूँ। यह वार गुरु ग्रंथ साहब में से है। गुरु रामदास जी महाराज आमतौर पर इस वार में उन कर्मकांडो का जिक्र करते हैं जिन्हें हम लोग महात्माओं के जाने के बाद अपना लेते हैं, मुक्ति का रास्ता समझते हैं। गुरु साहब हर तरह से हमारे उन भ्रमों को दूर करते हैं और समझाते हैं कि मुक्ति 'शब्द-नाम' में है।

प्यारेयो! महात्मा संसार में परमात्मा के हुक्म से आते हैं और परमात्मा के हुक्म में ही चले जाते हैं, वे इस संसार में एक घंटा भी ज्यादा रहकर खुश नहीं होते। यह संसार दुखों से भरा हुआ है। महात्मा अपने सेवकों से भी कहते हैं, ''यह अपना घर नहीं, यह बीमारियों का घर है पराया घर है; आप इसमें से निकलने की तैयारी 'शब्द-नाम' की कमाई करें।''

हमारे पिता का घर प्यार का घर है, सच्चा घर है। उसका मार्ग नाम से रोशन है उस रास्ते को सूरज-चंद्रमा रोशन कर रहे हैं। हमारा पिता सतगुरु प्यार का समुद्र है। जिन वस्तुओं ने हमारे पास नहीं रहना हम उनके साथ प्यार क्यों करें? जिन वस्तुओं से हम प्यार करते हैं जब वे वस्तुएं हमारे पास से चली जाती है तो

हमारे पल्ले शर्मिन्दगी के सिवाय कुछ नहीं बचता। क्यों न हम उस घर के अंदर पहुँचने की कोशिश करें, गुरु शब्द के साथ प्यार करें जो अभी भी हमारे साथ है और आगे भी हमारे साथ रहेगा।

प्यारेयो! सन्तों का संसार में देह धारने का मकसद अपने शिष्यों के अंदर उत्साह पैदा करना और उन्हें शब्द-नाम के साथ जोड़ना है। वे खुद पूर्ण होकर भी डेमोस्ट्रेशन देते हैं अगर आप भी ऐसा करेंगे तो आप भी पूर्ण हो सकते हैं। उनका संसार में आने का और कोई मिशन नहीं होता। उनका काम सोई हुई आत्माओं को **प्रभु के प्यार** में जगा देना है। गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं:

*गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति।*
*नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै, अवर न कुंजी हथि।।*

आप कहते हैं मन कोठा और शरीर छत है इसमें ईर्ष्या द्वेष के किवाड़ लगे हुए हैं। परमात्मा हमारी आँखों के पीछे वज्र का सख्त किवाड़ लगाकर बैठा है और वही इस किवाड़ को खोल सकता है। शब्द नाम की कुंजी महात्मा के हाथ में है। कुंजी वाले महात्मा सदा ही परमात्मा के हुक्म से संसार में आते हैं।

जिस तरह कबीर साहब और दस गुरु इस संसार में आए। उसी तरह हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी भी उसी श्रेणी के महात्मा थे जिन्होंने हमारी सोई हुई आत्मा को नाम का अमृत पिलाकर जगा दिया। महात्मा किसी खास जाति, कौम या मुल्क के लिए नहीं आते। वे सारे संसार के लिए आते हैं, सारे संसार को अपना घर समझते हैं और सबके साथ प्यार करते हैं। महात्मा प्यार की मूर्त होते हैं।

**गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति।**
**नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै, अवर न कुंजी हथि।।**

आप कहते हैं, ''आप मन बुद्धि से चाहे कितने भी उपाय कर लें वज्र के किवाड़ नहीं खुल सकते क्योंकि किसी के पास वज्र के किवाड़ खोलने की चाबी नहीं है। जब भी हमारा पर्दा खुला है हमें परमात्मा के साथ मिलाप करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वह किसी न किसी सन्त-सतगुरु के जरिए ही हुआ है।''

प्यारेयो! आप इस तरह भी समझ सकते हैं कि विद्या बच्चे के दिमाग में होती है उसकी चाबी टीचर के पास होती है। टीचर अपनी लियाकत से बच्चे के अंदर विद्या को जगा देता है। मेहनती शागिर्द की तरफ टीचर ज्यादा तवज्जो देता है। इसी तरह जो शिष्य पवित्र रहता है, ज्यादा मेहनत करता है गुरु भी उस पर सदा ही ज्यादा दया दृष्टि करता है।

**न भीजै रागी नादी बेदि।। न भीजै रागी नादी बेदि।।**

महात्मा हमें बताते हैं कि हम आमतौर पर अच्छी-अच्छी जगह पर जाकर राग गाते हैं, बाजे बजाते हैं और धर्मग्रन्थों का पाठ भी करते हैं। ऐसा हम परमात्मा से मिलने के लिए करते हैं लेकिन जो महात्मा अंदर जाकर परमात्मा से मिले हैं वे कहते हैं कि प्यारेयो! पढ़ना बुरा नहीं लेकिन आप सोचकर-विचारकर पढ़ें। राग को गाने से, वेदों को विचारने से परमात्मा खुश नहीं होता।

बाहर के राग पर हमारा मन मस्त होता है लेकिन अंदर के राग पर हमारी आत्मा मस्त होती है। जिस तरह मोर बादलों को देखकर नाचते हैं इसी तरह शब्द की आवाज सुनकर आत्मा खुश होती है। बाहर के राग अंदर के राग की नकल हैं। सच्चाई अंदर है जो अंदर जाकर शब्द के राग को सुनते हैं वे बाहर के राग पर मस्त नहीं होते। वे कहते हैं कि यहाँ वक्त क्यों खराब करना है?

महाराज सावन सिंह जी के आश्रम के सामने कुछ गर्म ख्यालों के लोग बाजे बजाकर कीर्तन करते और कहते कि आपका तरीका ठीक नहीं हमारा तरीका ठीक है। सन्तों के अंदर बहुत ताकत, नम्रता और सहनशीलता होती है वे अपने निंदक से भी प्यार कर लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी में भी ये गुण थे, आप प्यार की मूर्त थे। आप उन विरोधियों से कहते कि आपको खाने की दिक्कत होती होगी यहाँ गुरु का लंगर है आप लंगर में रोटी खा लिया करें। आप यह भी कहते, ''सोए हुए परमात्मा को जगाने वाले आ गए हैं, परमात्मा जागता है सोता नहीं।'' कबीर साहब कहते हैं:

*मुल्ला मनारे क्या चढ़े साईं न बहरा होए ।*
*जां कारण तूं बांग दे दिल ही भीतर जोए।।*

तू जिसकी खातिर ऊपर चढ़कर ऊँचा-ऊँचा बोलता है वह परमात्मा तेरे दिल के अंदर है वह बहरा नहीं, वह तेरे सोचने से पहले ही सुन लेता है। हम कभी-कभी परेड करते हुए महाराज सावन सिंह जी के दर्शन करने चले जाते थे। आर्मी में वायरलेस ने बहुत तरक्की की है। हमारे गले के पास माइक्रोफोन लगे होते थे, वे माईक्रोफोन हमारे फेफड़ों की आवाज को आउट करते थे। महाराज सावन सिंह जी हँसकर कहते, ''प्यारेयो! आपके अंदर एक ऐसी भी ताकत है जो बिना माईक्रोफोन लगाए हुए आपकी आवाज को सुनती है।''

उस समय हमें महाराज सावन सिंह जी की इन गहरी बातों का पता नहीं था। आपकी दया से जब आप मिले तो हमें उस माइक की ताकत का पता लगा कि वह किस तरह नज़दीक होकर हमारी आवाज को सुनती है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने भी कहा था, ''परमात्मा हाथी की आवाज से पहले चींटी की आवाज सुन लेता है।''

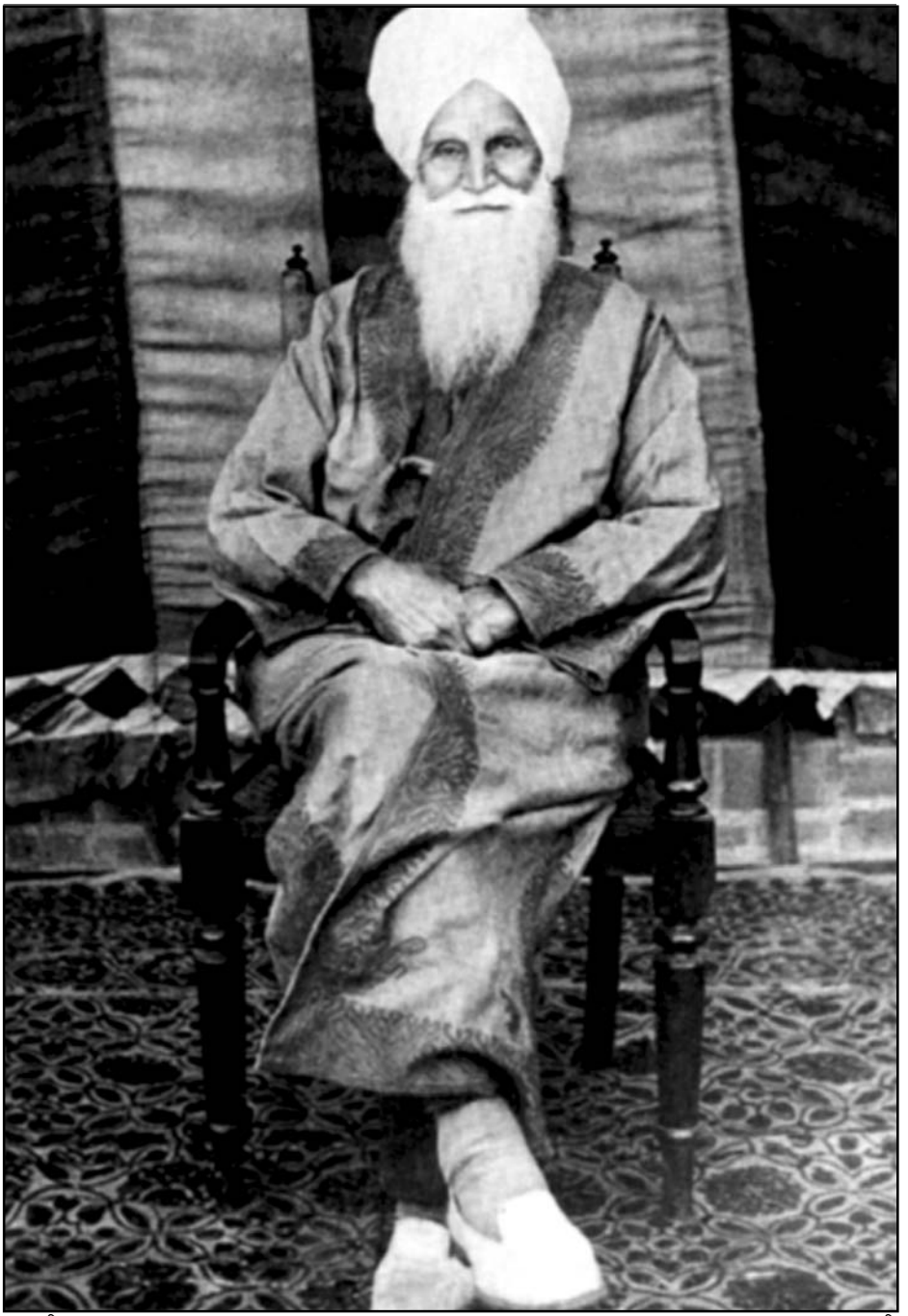

**न भीजै सुरती गिआन जोगि।। न भीजै सोगी कीतै रोजि।।**

आप कहते हैं, ''परमात्मा सत्ताईस स्मृतियाँ पढ़ने से वेदों के पाठ करने से खुश नहीं होता और न ही किसी पढ़े-लिखे के पास बैठने से परमात्मा की समझ आती है। कहीं आप यह सोचें! शोक करने से या अपने आपको लोगों की खाक समझने से परमात्मा मिल जाता है, आपका यह ख्याल भी ठीक नहीं। परमात्मा नाम जपने से मिलता है।''

**न भीजै रूंपी माली रंगि। न भीजै तीरथि भविऐ नंगि।।**

आप कहते हैं, ''कोई रूपवान या मायाधारी परमात्मा को खुश नहीं कर सकता। हिन्दुस्तान में यह रीति-रिवाज प्रचलित है कि लोग सर्दी में भी नंगे पैर चलकर तीर्थों पर जाते हैं। अगर आप परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो अपने दिल में **प्रभु का प्यार** रखे, शब्द-नाम की कमाई करें और कोई भी कर्म कारगर नहीं।''

**न भीजै दांती कीते पुंनि।। न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि।।**
**न भीजै भैड़ि मरहि भिड़ि सूर।। न भीजै कैते होवहि धूड़।।**

आप कहते हैं कि कहीं दिल में ख्याल हो! सर्दी में दिसम्बर के महीने में बाहर बैठने से परमात्मा मिल जाएगा। परमात्मा दान देने से खुश नहीं होता। हमें दान की महानता को समझना चाहिए कि महात्मा ने दान क्यों जरूरी रखा है? दान करने से सेवक की कमाई सफल होती है।

महात्मा जानते हैं कि मेरे शिष्य का दान पवित्र है। वह हमारा दान जरूरतमंद को दे देते है। महात्मा हमारी एक कोड़ी का भी भूखा नहीं होता। परमात्मा जंग में मरने मारने वाले सूरमों को

नहीं मिलता। परमात्मा से मिलने का रास्ता **प्रभु का प्यार**, शब्द-नाम है। शब्द-नाम की सड़क ही सच्चखंड को जाती है, हम नाम के रास्ते पर चलकर ही परमात्मा से मिल सकते हैं।

**लेखा लिखीऐ मन कै भाइ।। नानक भीजै साचै नाइ।।**

गुरु साहब कहते हैं, ''कौन सी चीज़ लेखे में आने वाली है? परमात्मा सच्चे नाम से ही खुश होता है उसे नाम की कमाई ही मंजूर है। जब हम अपने मन को इन्द्रियों के भोगों से ऊपर उठा लेते हैं तब सिमरन के जरिए गुरु को अंदर प्रकट कर लेते हैं।''

सन्तों को भूत, भविष्य और वर्तमान सबका ज्ञान होता है लेकिन वे अपने गुणों की नुमाईश नहीं करते। वे संसार में भोले-भाले बनकर रहते हैं। वे सेवक के मुँह से किसी घटना का जिक्र सुनकर खुश होते हैं। आपको उसी शब्द-धुन के साथ जोड़ा गया है। आप भी अभ्यास के जरिए इस शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं, आपको अंदर जाकर पता लगेगा कि सन्त किस तरह अपने शिष्यों का उद्धार करते हैं; किस तरह अंदर उनकी संभाल करते हैं और अपने सेवकों के क्या-क्या कष्ट सहते हैं?

प्यारेयो! हम सन्तों को दलीलबाजी से उस वक्त ही समझाते हैं जब हम कमाई नहीं करते अंदर नहीं जाते। जिसे आपकी कई जिंदगियों का ज्ञान है उसके रूबरू जाकर आप क्या बात करेंगे?

**नव छअ खट का करे विचार, निस दिन उचरे भार अठार।।**
**तिन भी अंत न पाया तोहे, नाम बिहूण मुक्ति क्यों होय।।**

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हिन्दु समाज में अठारह पुराणों की बहुत महानता है खट शास्त्र वेद के अंग गिने गए हैं। आमतौर

पर लोग सारी जिंदगी इन्हे विचारने में ही लगा देते हैं लेकिन नाम के बिना कोई किस तरह मुक्ति, शान्ति हासिल कर सकता है?''

**नाभि वस्तु ब्रह्मों अंत न जाणया।।**
**गुरमुख नानक नाम पछाणया।।**

आप अनुराग सागर पढ़ते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु की नाभि से पैदा हुए कमल का अन्त नहीं पा सका तो परमात्मा का अंत किस तरह पा सकता था? गुरु नानकदेव जी महाराज अपना तजुर्बा बयान करते हैं, ''गुरुमुखों ने अपनी जिंदगी में परमात्मा के साथ मिलाप किया है और अपने शिष्यों को भी उसका ही भेद दिया।'' महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा आदमी भी कर सकता है।''

**आपे आपि निरंजना जिनि आप उपाया।।**
**आपे खेल रचायन सब जगत सबाया।।**

आप परमात्मा की महिमा गाते हैं, ''परमात्मा ने संसार को पैदा किया। सब जीव-जन्तुओं को जिसके जिम्मे जो काम है उसे उस काम में लगाया। हम सब उसके हुक्म में ही काम करते हैं। परमात्मा इन सबसे निर्लेप है। जो **प्रभु के साथ प्यार** करता है उसे प्रकट कर लेता है वह भी निर्लेप हो जाता है।''

**त्रय गुण आप सृजन माया मोह वधाया।।**
**गुरप्रसादि उबरे जिन भाणा पाया।।**

आप प्यार से कहते हैं, ''उसने खुद ही इंसानों में सतोगुण, रजोगण और तमोगुण डाले। सबको पैदा किया और इन वस्तुओं के अंदर मोह पैदा कर दिया। इस संसार से वही मुक्त होता है जो परमात्मा के भाणे को मानता है।''

## नानक सच वरतदा सब सच समाया।।

महात्मा परमात्मा के प्यारे पुत्र होते हैं। वे अपने पिता परमात्मा की मर्जी के बिना कोई काम नहीं करते उसके भाणे में रहते हैं। दुख आए चाहे सुख आए इसे वह अपने पिता का खेल समझते हैं कि वह जो कुछ कर रहा है हमारी बेहतरी के लिए ही कर रहा है। ऐसा वही कहते हैं जो प्रभु की भक्ति करते हैं **प्रभु से प्यार** करते हैं।

हम परमात्मा की भक्ति नहीं करते। परमात्मा में नुख्स निकालते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ, ऐसा नहीं होना चाहिए था; हम परमात्मा का भाणा कैसे मान सकते हैं? अगर हम फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए दोनों आँखों के दरम्यान एकाग्र कर लेते हैं तो हमारी आत्मा के अंदर दुनिया के दुख-सुख सहने की शक्ति पैदा हो जाती है। परमात्मा के हुक्म से ही घटना घटती है अगर हमारे साथ कोई बुरी घटना घटती है हम उस घटना को बर्दाश्त करने का बल प्राप्त कर लेते हैं।

गुरु साहब ने इस छोटे से शब्द में बड़े प्यार से बताया है कि मुक्ति नाम में है और नाम पूरे सतगुरु से मिलता है। नाम लिखने पढ़ने और बोलने में नहीं आता। यह बिना लिखा कानून है, बिना बोली भाषा है इसकी कुंजी गुरु के हाथ में है। जो लोग भक्ति करते हुए प्रभु के भाणे में रहते हैं वे **प्रभु का प्यार** पा लेते हैं।

***

24 दिसम्बर 1988

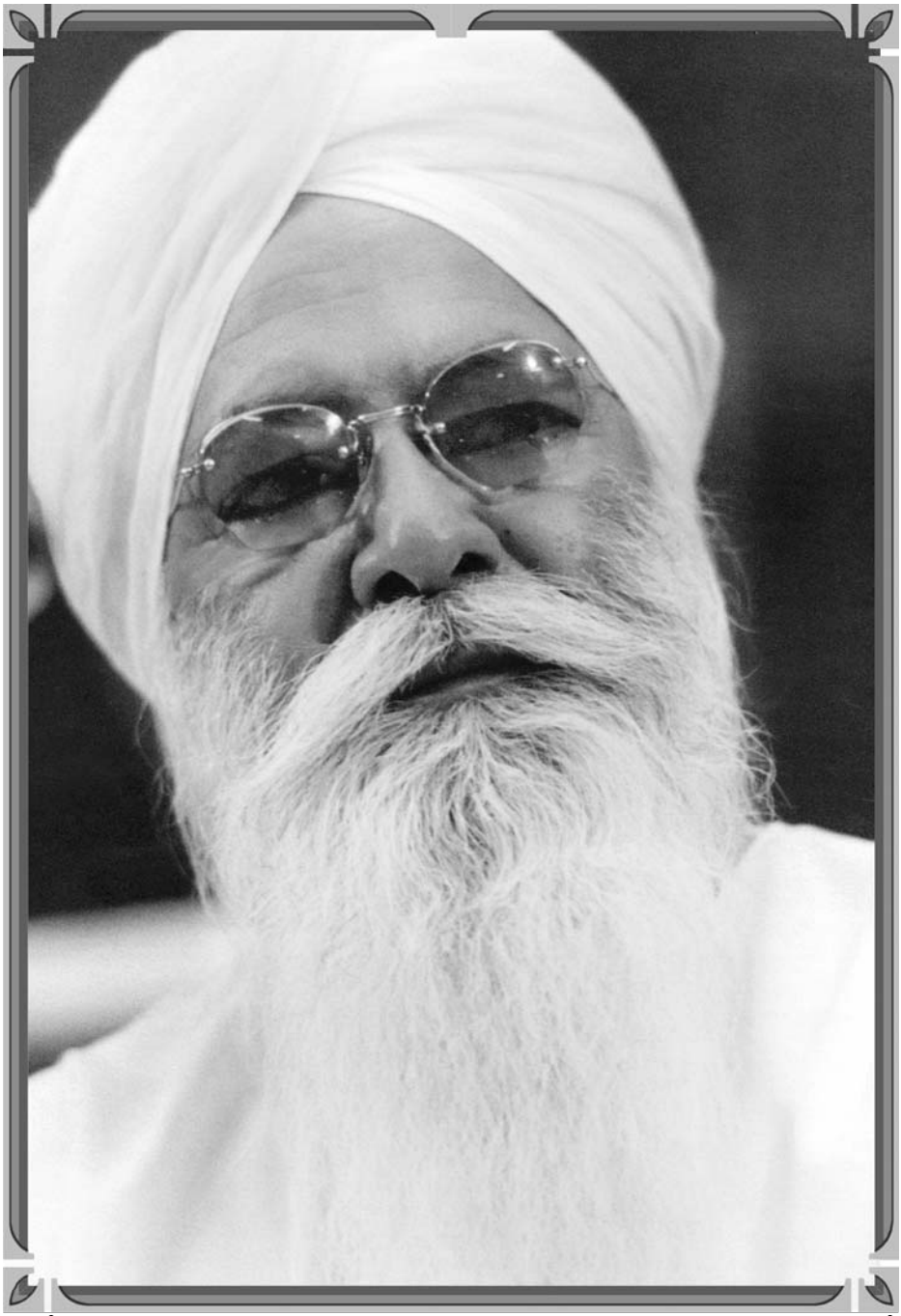

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

# गुरु का दीदार

*झूठी दुनिया च फँसया दिल मेरा कोई आके बंधन तोड़ गया।।*

हाँ भई! हम परमात्मा का धन्यवाद करते हैं जो हम जीवों की खातिर इस संसार में इंसानी चोला धारण करके आया और उसने हमें अपनी भक्ति में लगाया। कबीर साहब कहते हैं:

*जो प्रभ किए भक्त ते वांझ तिन ते सदा डराने रहिए।*

उन लोगों से डरें जो भक्ति नहीं करते। सन्तों के बिना संसार कभी भी सूना नहीं रहता। सन्त हमेशा आते हैं लेकिन जिनका भाग्य है वही उनसे फायदा उठाते हैं। सन्त संसार में खुले दिल से देने के लिए ही आते हैं। हम दुनियादारों को पता नहीं कि कौन सी चीज़ मांगनी है, कौन सी चीज़ हमारे लिए फायदेमंद है?

आमतौर पर हम दुनिया के जीव दुनिया में फँसे हुए हैं और यहीं फँसे रहना चाहते हैं लेकिन परमात्मा हमें 'शब्द-नाम' का भंडार देने के लिए आता है। कोई दूध माँगता है, कोई बेटा माँगता है; कोई धन-दौलत तो कोई मान-बड़ाई माँगता है लेकिन गुरु के आशिक तो सिर्फ **गुरु का दीदार** मांगते हैं कि किसी न किसी तरह वह मन मोहनी मूरत मिल जाए हमारी आँखो में समा जाए।

इंसान सुख-आराम छोड़ सकता है दुनिया छोड़ सकता है हालाँकि यह बहुत मुश्किल है लेकिन भूखे रहना भी मुश्किल है। फरीद साहब कहते हैं:

*फरीदा मौतों भुख बुरी, राती सुत्ता खाकर तड़के फेर खड़ी।*

बहुत से ऐसे आदमी हैं जो खाना नकार देते हैं पवनहारी हो जाते हैं। इंसान आराम करना छोड़ देगा दुनिया के ताने-मेहणे

आसानी से झेल लेगा लेकिन गुरु के साथ इश्क-प्यार लगाना बहुत ही मुश्किल है क्योंकि अपने आपको किसी इंसान के हवाले करना बहुत ही मुश्किल है। मन अंदर बैठा है यह कई बार गुरु पर श्रद्धा लाता है कई बार अभाव भी ले आता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''एक बुरा ख्याल इंसान को ब्रह्मांड की चोटी से नीचे गिरा देता है।'' हम एक महीना अभ्यास करते हैं अगर एक बार भी गुरु पर अभाव आ गया तो मन महीने की लिखी तख्ती को पोच देता है। तख्ती लिखते हुए समय लगता है लेकिन साफ करते हुए समय नहीं लगता; हमारे मन की यही हालत है। उनके ऊँचे भाग्य थे जिन्होंने परमात्मा को इंसान के जामें में देखा। आगे हम अपने भाग्य से फायदा उठा रहे हैं लेकिन उसकी तरफ से कोई कमी नहीं आती। बुल्लेशाह कहते हैं:

*सतगुरु के दरबार में कमी काहूँ की नाहीं।*
*बंदा मौज न पावी चूक चाकरी माहीं।।*

जीव उस मौज को प्राप्त नहीं कर रहा क्योंकि यह चाकरी करते हुए कई बहाने लगाता है अहसान करता है। कहता है कि देखो जी! मैं सुबह जल्दी उठा, मैंने दस दिन भजन किया फिर भी मेरा यह नुकसान हो गया हालाँकि उसे यह नहीं पता कि इसमें ही उसकी बेहतरी होगी! जब जीव को पता ही नहीं कि मेरा फायदा या नुकसान किसमें है तो यह किसलिए तड़प रहा है क्यों रो रहा है?

मैं बताया करता हूँ बेशक मेरे आगे बहुत कठिन इम्तिहान था। यह उनकी ही दया थी कि मैं अपने गुरु के आगे खड़ा होकर प्रेम-प्यार से कह सका, ''मैंने न राम देखा है न रहीम देखा है न ही मैं किसी में यकीन रखता हूँ। मैंने तुझे देखा है मुझे तुझ पर यकीन आ गया है।''

यह मेरे बस का खेल नहीं था, आत्मा की आवाज थी परमात्मा आत्मा की आवाज सुन रहा था, उसके घर में क्या घाटा था?

गुरु गोबिंद सिंह जी के बहुत अच्छे-अच्छे चेले थे कई राजा भी आपके पास आते थे। वहाँ भाई नंदलाल ही ऐसा था जिसने यह कहा, *''तेरी ईक नजर है मेरी जिंदगी का सवाल है, तेरा दर्शन ही मेरे लिए नशा है।''* अगर और लोग भी भाई नंदलाल की तरह सोचते तो क्या वे बेदावा लिख सकते थे? गुरु ने नाम तो बेदावा लिखने वालों को भी दिया था उनकी भी जिम्मेवारी उठाई थी। उन्होंने तो लिखकर दे दिया कि तू हमारा गुरु नहीं लेकिन गुरु ने तो यह नहीं लिखा कि तुम मेरे शिष्य नहीं हो।

आज कलयुग में जीवों की क्या हालत है? ख्याल इतने ज्यादा फैल चुके हैं कि किसी को इस तरफ आने की फुर्सत ही नहीं। घर से निकलते हैं तो मन अनेकों ही अड़चने डालता है। जिसके ऊपर वह दया करता है जिसे रस आ गया कि भक्ति में यह सुख है भक्ति के ये फायदे हैं चाहे वह कितने ही कारोबार में लगा हो या खाली हो वह भक्ति ही करेगा।

सन्त सतसंगी को नाम के पास पहुँचने के लिए रास्ता देते हैं कि तुम इस रास्ते से जाओगे तो नाम के पास पहुँच जाओगे। नाम सतगुरु ने पैदा किया होता है, वह नामरूप ही होता है। जिन्होंने गुरु को पकड़ लिया उनकी भक्ति अभ्यास में ही आ जाती है। हमें यह भी यकीन है कि जिसने गुरु को समझ लिया गुरु के साथ प्यार कर लिया वह गुरु का दिया हुआ काम भी करेगा।

सन्त-सतगुरु कहते हैं अभ्यास करें। जहाँ तक हो सके बुराई से बचें। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पापी से घृणा न करें पाप से घृणा करें।''

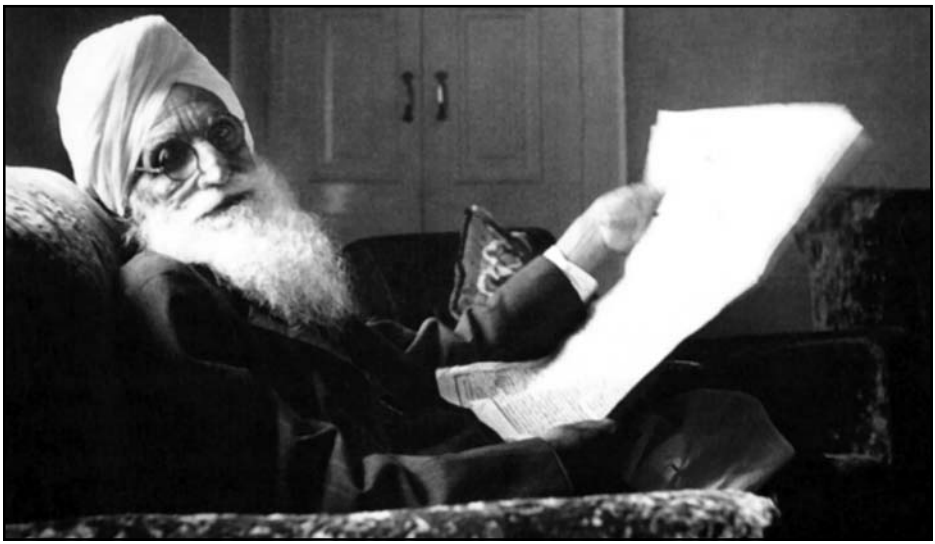

कई बार ट्रेन में सफर करते हुए हमारे सिक्ख भाई तम्बाकू पीने वालों से बहुत लड़ते। मैं चुप करके बैठा रहता। उनमें से कई मुझसे कहते कि तू सिक्ख है इन्हें मना क्यों नहीं करता? मेरे पास एक ही जवाब होता था कि मैंने सारी जिंदगी तम्बाकू से घृणा की है इसे छुआ तक नहीं लेकिन तम्बाकू पीने वालो से घृणा नहीं की क्योंकि मैंने गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज का लेख पढ़ा है कि उनका घोड़ा भी तम्बाकू के खेत में नहीं गया था।

सांगली के राजा ने बाबा सावन सिंह जी को अपने सारे खेत दिखाए। जब तम्बाकू वाले खेत में गए तो आपने उसमें पैर नहीं रखा। बाबा जी ने कहा, ''हमारे बड़े गुरुओं का घोड़ा भी तम्बाकू के खेत में नहीं गया था हम अवज्ञा नहीं कर सकते।''

महापुरुष हमें ऐबी से नहीं ऐब से घृणा करवाते हैं। हो सकता है उनके सुधार के लिए हमारी ही ड्यूटी लग जाए। आपने यहाँ सतसंग में जो सुना है घर जाकर इस पर जरूर अमल करना है और अपने घरों के कारोबार भी निभाने हैं। ***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# शब्द

स्वामी जी महाराज की बानी | DVD -544 | 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

*आओ सतगुरु आओ जी दुखियां दे दर्द मिटावो ।।*

सन्त-महात्मा प्यार की मूर्त होते हैं। वे हर आत्मा के साथ प्यार करते हैं चाहे वह आत्मा उनकी नामलेवा है या नहीं है। उनकी नज़र आत्मा पर होती है बुराई मन में है। सन्तों को सतसंगी अपनी जान और प्राण से भी प्यारे होते हैं क्योंकि सतसंगी उनके रूहानी बच्चे होते हैं और उनमें से ही किसी ने उनकी आध्यात्मिक रूहानी जायदाद का वारिस बनना होता है। दुनियावी बच्चे तो सिर्फ दुनियावी जायदाद के ही वारिस बन सकते हैं।

महाराज कृपाल पच्चीस साल यही संदेश देते रहे, ''सन्त किसी जाति, फैमिली या मुल्क के साथ बंधे हुए नहीं होते। सन्त संसार में मानव जाति के लिए आते हैं और सबका भला सोचते हैं।'' सवाल हमारी श्रद्धा और प्यार का है कि हम उन मालिक के प्यारों से कितना फायदा उठाते हैं? महाराज सावन सिंह जी और गुरु नानकदेव जी ने भी यही संदेश दिया।

सब सन्तों का यही संदेश है कि सारी दुनिया '**शब्द**' ने ही रची है, 'शब्द' ही सर्वव्यापक है। यही 'शब्द' हर जीव, पशु-पक्षी के अंदर काम कर रहा है। 'शब्द' की ताकत ही हर जगह काम कर रही है। यही '**शब्द**' समय-समय पर देह धारकर हमारे बीच आकर रहता है, हमें हमारे घर का भेद बताता है; हमारे अंदर तड़प पैदा करता है और हमें हमारे घर पहुँचने में मदद करता है।

जो लोग नाम रूपी सतगुरु को किसी फैमिली का नुमाईंदा समझते हैं उन्हें सन्तमत की समझ ही नहीं उन्हें पता ही नहीं कि

सन्तमत क्या चीज़ है? **'शब्द'** सबके अंदर है, 'शब्द' सबका दाता सबका बादशाह है। जिस तरह हम स्थूल दुनिया के भौतिक जगत में छोटे-बड़े द्वीप-महाद्वीप देखते हैं कि उनके अंदर हर किस्म के जीव, पशु-पक्षी इंसान भी आबाद हैं इसी तरह सूक्ष्म मंडलों के अंदर भी रचना आबाद है। मौत-पैदाईश वहाँ भी है, हिन्दु लोग उसे स्वर्ग और मुसलमान उसे बहिश्त कहते हैं।

सन्तों ने हमें सदा ही खबरदार किया है। आमतौर पर ये कौमें स्वर्ग और बहिश्त का लालच देती हैं कि आपको स्वर्ग मिलेंगे लेकिन वह जगह भी आत्मा के रहने के लिए सुरक्षित नहीं। वहाँ भी इस मंडल की तरह ईर्ष्या, जलन और भोग-वासना है। यहाँ इंसान भोगों के हाथों दुखी हुआ फिरता है, काम इसे बंदर की तरह नचा रहा है; यही हालत स्वर्गों में है। कबीर साहब कहते हैं:

*क्या स्वर्ग क्या नर्क सन्तन दोऊ रादे।*
*हम काहूं की कान न कड़दे अपने गुर परसादे।।*

प्यारेयो! सन्त अपने सेवकों को न स्वर्गों का लालच देते हैं और न नर्कों का डर ही दिखाते हैं। सन्त स्वर्ग-नर्क दोनों को ही रद्द करते हैं। सन्त हमेशा ही अपने गुरु की दया मांगते हैं कि हे सतगुरु! तू हमें यहाँ से बचाकर ले चल। काल ने आत्माओं को फँसाने के लिए स्थूल, सूक्ष्म और कारण मंडल रचे हुए हैं, यह काल की चाल है। सन्त संसार में आकर अपने बच्चों को खबरदार करते हैं कि काल के झाँसे में न आएं।

काल ने स्थूल शरीर को दुनियावी भोगों के बीच ही फँसाया हुआ है अंदर नहीं जाने देता अगर कोई थोड़ा बहुत एकाग्र होकर अंदर जाता है तो काल ने अंदर सूक्ष्म मंडलों में बड़े-बड़े जाल बुने हुए हैं। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि ये जाल कितने भयानक

हैं। हम गुरु की मदद के बिना अपने आप काल के जाल को नहीं तोड़ सकते। आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनें:

**गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना।**

मैं सदा ही बताया करता हूँ, ''सन्तमत परियो की कहानी नहीं यह कोई इन्द्रजाल नहीं यह एक सच्चाई है और सच्चाई पर आधारित है। जिसने सन्तमत को परखना है वह पहले अपने आपको परखे। जो अपने आपको परख लेगा उसके लिए भगवान को समझना भी आसान हो जाएगा। हमने गुरु के पास क्यों जाना है? सन्तमत में गुरु को कुलमालिक समझा जाता है। गुरु की महिमा जाननी है तो किसी पहुँचे हुए से पूछें।''

कबीर साहब कहते हैं, ''कोई पहुँचा हुआ साधु ही गुरु की महिमा बता सकता है। जिसने फल खाया है वही फल का स्वाद बता सकता है। मिश्री की लज्जत मिश्री खाने वाला ही बता सकता है। जिसने अंदर के मंडलों में गुरु की महिमा देखी है वही आपको गुरु की ताकत के बारे में बता सकता है कि गुरु की ताकत किस तरह जर्रे-जर्रे में काम करती है।''

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''गुरु मेरी जान हैं और गुरु ही मेरे प्राण हैं। आत्मा को आधार देने वाला गुरु ही है। इस ताकत के होने की वजह से ही हमारा शरीर कायम है। जब हमारे अंदर **'शब्द'** बंद हो जाता है तो आत्मा निकल जाती है।''

गुरु ने मुझे 'शब्द-नाम' का दान दिया है। यह दान कीमत देकर या माँगने से नहीं मिलता और हम इसे किसी जोर से भी हासिल नहीं कर सकते। काल में ऐसी ताकत नहीं कि वह इस

'शब्द' की ताकत को खत्म कर दे। **'शब्द'** को आग जला नहीं सकती, पानी डुबो नहीं सकता; हवा उड़ा नहीं सकती।

महात्मा किसी ग्रंथ-पुस्तक के मोहताज नहीं होते वे अपनी मिसाल खुद होते हैं। वे जो भी बात कहते हैं आँखो से देखकर कहते हैं। महात्माओं के दिल में ग्रन्थ-पुस्तकों की बहुत इज्ज़त होती है क्योंकि ग्रंथ-पुस्तकें कमाई वाले महात्माओं की लेखनियां हैं। हमें यकीन आ जाए इसलिए वे ग्रन्थ-पुस्तकों की अगुवाही देते हैं बेशक कोई महात्मा किसी भी युग में आया हो हर महात्मा का उपदेश 'शब्द-नाम' का ही रहा है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

*नाम बिना नहीं छूटस नानक, सांची तरत उतारी।*

हमें गुरु नानकदेव जी की लेखनियों से पता लगता है कि आप 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते थे, शब्द-नाम का होका देते थे और आप शब्द-रूप थे।

क्राईस्ट भी अपने शिष्यों को 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते थे। अंदर शब्द-नाम के साथ जुड़कर ही सच्चा ईसाई बन सकता है। जिस मंडल में क्राईस्ट रहते हैं हम वहाँ पहुँचकर उनसे मिलें उनकी ताकत को देखें तभी हम ईसाई बन सकते हैं।

सन्त अपने शिष्यों को अपनी देह के साथ नहीं 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं। 'शब्द-नाम' सदा कायम रहता है। जो लोग उनके जाने के बाद उनकी टेक बांध लेते हैं कि ये हमारी मदद करेंगे यह काल का भ्रम है अगर उन्होंने भूतों की तरह यहीं चक्कर लगाने थे तो उन्हें 'शब्द-नाम' का अभ्यास करने की क्या जरूरत थी?

इतिहास बताता है कि बड़ी-बड़ी चोटी के परमात्मा रूप महात्मा इस संसार में आए लेकिन इस दुनिया ने उन्हें माफ नहीं किया

उनसे फायदा उठाने की बजाय उन्हें कष्ट और अमानवीय तकलीफे दी जिसे याद करके आत्मा काँप उठती है। हिस्ट्री में आता है कि क्राईस्ट को काँटो का ताज पहनाया गया। गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठाया गया। शम्स तबरेज की जीते जी खाल उतार दी और मंसूर की जीते जी आँखे निकाल ली। प्यारेयो! इस दुनिया ने क्या नहीं किया? जिसके साथ इतना बुरा सलूक हुआ हो क्या वे परमात्मा रूप बार-बार इस संसार में आएंगे? वे परमात्मा रूप परमात्मा में जाकर मिल जाते हैं।

इतिहास भी गवाही देता है कि उस वक्त परमात्मा ने क्राईस्ट से पूछा, ''तुझे किसी मदद की जरूरत है? तू कहे तो मैं इन्हे कष्ट दे सकता हूँ?'' क्राईस्ट ने कहा, ''हे परमात्मा! तू इन पर रहम कर ताकि ये मुझे पहचान लें कि मैं अपने दिल में इनके लिए कितनी रहम दिली रखता हूँ।'' जब परमात्मा ने मंसूर से कहा, ''ये लोग तुझे इतनी तकलीफे दे रहे हैं अगर तू कहे तो मैं धरती को उलटी-सीधी कर दूं!'' मंसूर ने कहा, ''नहीं! तू इन सबके ऊपर दया कर, इन्हें बख्श दे।''

गुरु अर्जुनदेव जी का एक प्रेमी मियां मीर था। जब मियां मीर ने गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बैठे हुए देखा तो उसने कहा, ''गुरुदेव! आप मुझे थोड़ा सा इशारा करें, मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा सकता हूँ।'' अर्जुनदेव जी ने कहा, ''मियां मीर! ऐसा तो मैं भी कर सकता हूँ लेकिन महात्मा के लिए मालिक का भाणां मानना और उस पर सख्ती से चलना बहुत जरूरी होता है।''

प्यारेयो! आप देख सकते हैं कि सन्त आत्मा के लिए कितना प्यार लेकर आते हैं बेशक हम उन्हें कष्ट देते हैं वे फिर भी हमारे भले के लिए अरदास करते हैं।

**शब्द मेरा आधार, शब्द का मर्म पिछाना।।**

अब आप कहते हैं, ''मैं गुरु के दिए हुए शब्द-नाम की कमाई करता हूँ। मुझे उसी शब्द की समझ आई है कि यह **'शब्द'** ही सारी दुनिया में सर्वव्यापक है।''

**क्या गुण गाऊँ शब्द, शब्द का अगम ठिकाना।।**

आप कहते हैं, ''मैं उस शब्द-नाम के क्या गुण गाऊँ? वही शब्द देह धारण करके संसार में आता है। उसका ठिकाना अगम देश में है देह तो उसने हमें समझाने के लिए ही धारण की है।''

प्यारेयो! सन्तों के अंदर 'शब्द-नाम' की ताकत काम करती है। वह ताकत जन्म नहीं लेती मरती नहीं, जन्म तो देह लेती है और मरती भी देह ही है। जो **'शब्द'** वहाँ प्रकट होता है वह सदा ही कायम है बेशक कोई महात्मा हमें नाम देकर उसी समय चोला छोड़ जाए वह ऊपर के मंडलो में बैठा उस प्रेमी की तब तक संभाल करता है जब तक उसे धुरधाम न पहुँचा दे। जब दूसरा महात्मा संसार में आता है वह उसे जिम्मेवारी सौंप देता है।

महाराज जी कहा करते थे, ''जिस तरह एक बल्ब फ्यूज हो जाता है तो उसकी जगह दूसरा बल्ब लग जाता है। वही प्रकाश होता है वही रोशनी होती है।'' सतसंगी के लिए वह 'शब्द' सदा ही जीवित रहता है।

सन्त-महात्मा किसी आत्मा को अपने शरीर के साथ नहीं जोड़ते, वे उसे 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं। महात्मा जब तक देह में बैठे हैं वे यह नहीं कहते कि हम आपके गुरु या पीर हैं। वे कहते हैं कि आपका गुरु शब्द-नाम है। जब सतगुरु देह छोड़कर संसार से चले जाते हैं तब शिष्यों का बहुत भारी नुकसान होता है। उनके

दर्शनों से हमारे पाप कटते हैं और बुरे कर्मों का खात्मा होता है, तब हमारा वह फायदा होने से रह जाता है।

**बिना शब्द सब जीव, धुँध में फिरें भरमाना।।**
**जल पाषान पूजत रहें, रहें कागज़ अटकाना।।**

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमें यह नहीं पता कि हम किस जगह से आए हैं? हम कितनी योनियों में फिरे हैं? हमने कितनी पत्नियां बनाई कितने पति धारण किए? कितने बच्चे बनाए और हमने किस-किस मुल्क में जन्म लिया ? शब्द-नाम की कमाई के बिना हम अंधेरे में फिर रहे हैं।'' गुरु अंगद देव जी महाराज भी यही कहते हैं, ''नाम जपने से अंदर प्रकाश हो जाता है, अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है।''

काल ने यह चाल चलाई है कि जब हम इंसान के जामें में आते हैं तो काल हमें ग्रंथ पढ़ने में लगा देता है, हम ग्रंथ पढ़ने में ही मुक्ति समझते हैं इसी तरह पानी को पूजते हैं। आमतौर पर बहुत से फिरके यह कहते हैं कि फलाने सरोवर, तालाब या नदी में नहाकर ही मुक्त हो सकते हैं।

**मन मत ठोकर खाय, गये चौरासी खाना।।**
**बहु विधि बिपता जीव को, बिन शब्द सुनाना।।**

आप कहते हैं, ''शब्द नाम की कमाई के बिना मन के पीछे लगकर चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए पता नहीं हमनें कितने जन्मों में निचली योनियों में जाकर क्या-क्या कष्ट उठाए? आप इंसानी जामें की तरफ देखें! क्या इसमें सुख है? अगर थोड़े बहुत सुख नजर आते हैं तो ये सुख भी आरजी हैं पता नहीं इन सुखों ने कब दुखों में तब्दील हो जाना है!''

**सतगुरु की सेवा बिना, नहिं लगे ठिकाना।।**
**शब्द भेद बिन सतगुरु, क्या कहें अजाना।।**

आप कहते हैं, ''हमने चौरासी लाख की निचली योनियों में जाकर ठोकरें क्यों खाई? क्योंकि हमें गुरु नहीं मिला या हमने गुरु का दिया हुआ नाम नहीं जपा शब्द-नाम की कमाई नहीं की या हमें कोई अभ्यासी गुरु नहीं मिला सिर्फ बाहर जमा खर्च वाला ही मिला या हमने गुरु के मिलने की परवाह नहीं की।''

प्यारेयो! गुरुवाई का काम कमाई वाले महात्मा का ही काम है। कमाई वाला महात्मा जो नाम रूप हो चुका है वही हमारी आत्मा को उभार देकर अंदर ले जा सकता है।

**मन इन्द्री बस में नहीं, तो काल चबाना।।**
**राधास्वामी सरन ले, सब भाँति बचाना।।**

अब आप कहते हैं, ''आलम-फाजिल गुरु हमारा क्या कर सकता है? वह खुद मन-इन्द्रियों का गुलाम है उसने काल के मुँह में जाना है जो उसकी शरण में जाते हैं वे भी काल के मुँह में जाएंगे।'' कबीर साहब कहते हैं:

*अंधा गुरु ते अंधा चेला, नर्का नर्कीं धकम धकेला।।*

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''परमात्मा की दया से हमें पूरा गुरु मिला। हमने सच्चे दिल से गुरु की शरण अख्तियार की और गुरु ने हमें यतीम समझकर अपने चरणों में जगह दी।''

मैं अपने ऊँचे भाग्य समझता हूँ कि बड़ी दया करके मुझे परमात्मा रूप गुरु कृपाल मिले। आपने मेरे अंदर अपने मिलाप का उत्साह भरा; मैं सदा ही आपका धन्यवादी हूँ।

7 नवम्बर 1988

***

# धन्य अजायब

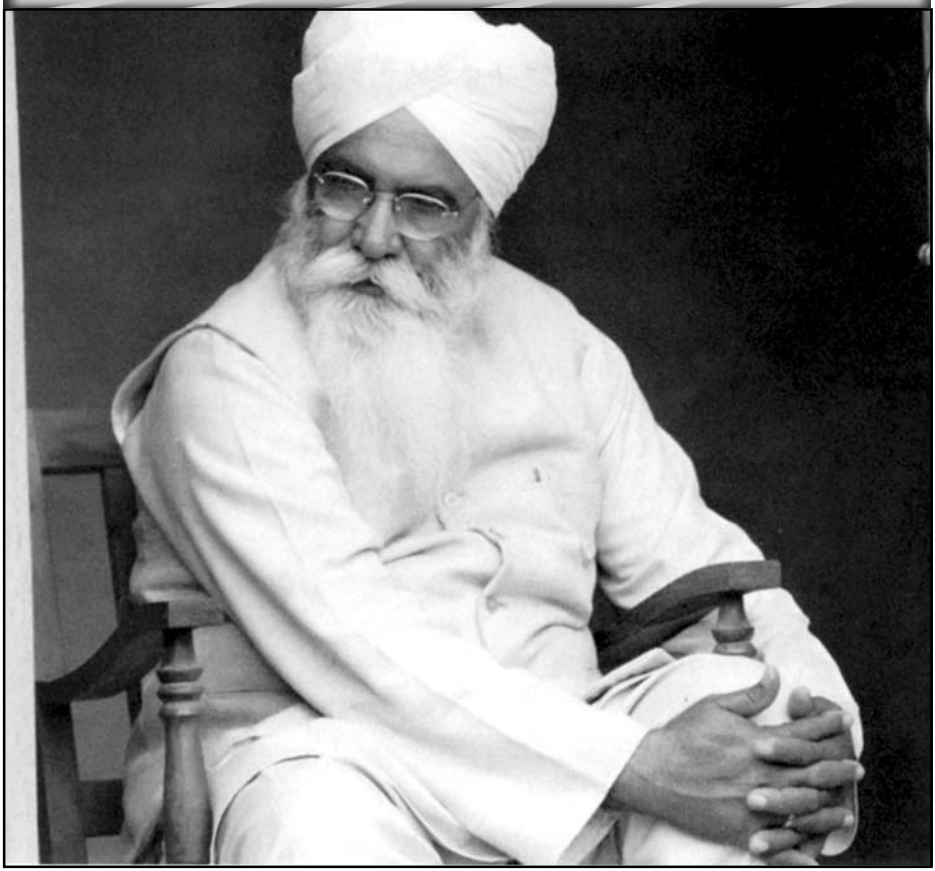

## 16 पी.एस. राजस्थान आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम:

2 से 6 फरवरी 2016

4, 5 व 6 मार्च 2016

31 मार्च 1 अप्रैल व 2 अप्रैल 2016